

आज के नए यूरोपीयन कवि १ यूनान
कोस्तिस पापाकोगोस

अश्वत्त जनपद
और अन्य कविताएँ

1

ग्रीक भाषा से हिन्दी अनुवाद
सतीकुमार

जावेश फोरम नई दिल्ली के
सौजन्य से प्रकाशित

इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-५१

प्रसंगवश

मैं एक प्रचण्ड सिर का हाथा मे लिए जाग पड़ा हूँ और इससे
भार से भरी कुहनिया अटक चुकी हैं। मैं इसे वहाँ स्थापित
करूँ ?

जब मैं सपने में बाहर निकला तो यह सपन में डूब रहा था।
जब हमारे पिण्ड इस तरह घुल मिल गए हैं कि उन्हें अलग
करना संभव नहीं

(निवृत्त)

कोस्तिस पापायागोस की इन श्रद्धाओं का अनुवाद करते समय
नोबेल पुरस्कार विजेता ग्रीक-कवि मफेरिस की उपर्युक्त पंक्तियाँ अचानक
याद आती रही। १९६७ की सन्निवृत्ति के बाद ग्रीस के सरडो बुद्धि
जीवियों को अपनी भातभूमि में जलाना पड़ा। कोस्तिस भी उनमें से
एक था। लेकिन इस दीर्घ प्रवास के बावजूद (तब से वह स्वीडन में रह
रहा है) वह 'ग्रीस' से नहीं टूटा। यह 'एक और ग्रीस' (इस ग्रीस की एक
कविता भी यहाँ मयलित है) उन स्वयं अपने अदर मिला। उसकी कविता
इस निम्नग्रीस को तानाशाही के ध्वंस पर फिर से स्थापित होत देखने
की सघन प्रणिया है।

ग्रीक-कविता पर वहाँ का एक अन्य प्रसिद्ध कवि कावाफी के प्रभाव
का जिक्र अक्सर होना आया है। लेकिन वहाँ की युवा पीढ़ी कावाफी से
उतना ही आगे जा चुकी है जितना कि वह हिन्दी कविता से अगेत पीछे
रह चुके हैं। कोस्तिस पापायागोस भी ग्रीस के युवा-ग का प्रसिद्धि प्राप्त
एक 'प्रतिपक्ष' कवि है (ग्रीस में उसकी कविताओं पर प्रतिबंध है) यहाँ तक
कि उसकी सम्मंड कविताओं भी (मुझे) और सभा भवन आदि)
इसका अपवाद नहीं।

कविताओं का हिन्दी-अनुवाद स्वयं कवि के मातृचय में मूल ग्रीक-
भाषा में किया गया है। विश्व की प्राचीनतम मस्त्रियों के उद्गम-स्थल
दो दूरगम-देशों—भारत और ग्रीस—की वाक्य पीटिया के मध्य 'संवाद' का
रूप में उठाया गया यह पहला सम्म एन महत्वपूर्ण 'यात्रा' की शुरुआत है।



क्रम

| | |
|----------------------|----|
| समय महान | ९ |
| बीस साल वरमात मे | १० |
| एक और ग्रीस | १४ |
| अशक्त जनपद | १६ |
| रिचर्ड निक्सन के नाम | २० |
| रिपोर्ताज | २६ |
| सभा भवन | २७ |
| मुशेन | ३० |
| फलकसा | ३२ |
| गोशनी के पीछे | ३४ |
| स्वत्व | ३६ |
| जरा | ३७ |
| आकृति | ३८ |
| जीवा-वत्त | ४० |
| हवा | ४१ |
| आकाश | ४२ |
| नाम-नुसार | ४४ |
| बीज | ४५ |
| शब्द-संकेत | ४७ |

इस युद्ध की बदतूत लगी तो मैंने तुम्हारा
राष्ट्रीय ध्वज भी उसे नहीं पोंछ सकता ।

समय-महान्

सघर्ष के क्षणों में
हम कविताएँ नहीं लिखते
एक वहशी लग गाने हुए
हमारी हड्डियाँ बिखर जाती हैं
और तारतुसों की भ्रमभ्रमाहट—
हवा में भर जाती है ।

हवा में उठे पुला पर से
हमें अपनी हुकारें सुनाई देती हैं
जब कि नीचे से जहाज गुजरते हैं ।

मघर्ष के क्षणों में
हम 'दर्शन' नहीं पढ़ते ।
हमारे शरीरों में पनाह लेते हैं
हजारों निष्कामित मूरज
जिनकी लपटे दिखाई देती हैं
हमारे अस्त्रों से लपकती ।

आ समय महान् ।

बीस साल बरसात में

गुरिल्लो का आमेट-म्यल में पिंदोस-गवत'
घास से ढंका यूनान का गर्वित-वक्ष है ।

यहाँ हमारे दिल घड़ना करते थे
तोपा की कवचा लय में
जो अन्धेरे में जिगर काट जाती थी ।
यही हमने अपने इन्तज़ार में पाया था
खत-लपटों में दहकती
प्राणप्रिया आजादी का ।

तभी आकाश में विपाकत बादल घिर आए
और बम-वर्षा ने हमें निष्क्रिय कर दिया ।
देसते-देसते बर्बर-आधिया
हमारे फालादी-धड़ों से सिर उड़ाकर ले गई
अ-धी-दिगाजो में ।
और खड़े रह गए हम
निर्वसन—पेट धड़
उगलिया-कटे भिक्षुक हाथा की तरह ।

उसके बाद विदेशी सौदागर यहाँ पहुँचे
 तकनीकी जबड़ो से लैस
 हमारे पैरो को रौंदते हुए ।
 उसके बाद रहा-सहा स्तन,
 'मार्शल'-प्लान के सिरिज भेद कर
 हमारी पीड़ित नमो मे खींच लिया गया ।

गुरिल्लो का आयेट-स्थल ये पिंदोस
 सपनों के मरघट मे बदल गया ।

अब वहा पर सुनारि नही देता
 अस्त्र-कठो से बुलबुल का परिचित गीत ।
 रोशनी का लगडाता बदन
 अंधेरे के पैबदा और हथकड़ियों मे घिर कर रह गया ।
 अब वहा उडती है
 धूप की फटी लाल-झडियाँ ।
 बीस साल की आततायी बरसात मे
 सभी पहाड गल गए—
 याचको की तरह मिफ शिलाए गढी रह गई
 सूखार-दातो की तरह
 जो अन्धेरे मे जगली-साडो सी दिखती है ।

लेकिन हमारी आस्था एक दूसरे मूरज मे है
 जिसकी पैनी-किरणे
 पर्वतो की वर्षीली-कोम मे गडती जा रही हैं
 जिसकी तपश मे
 मरे हुए बीज करवटें ले रहे हैं
 और उगने लगा है
 अम्त्राकार पेडो का दुर्भेद्य जगल ।

हमारी आम्हा उन हाथो मे है
 जो जाघी और वर्षा मे भी निर्माण करने बन गए,
 जिनका आगोश
 हमारे अपूरे गीतो की अगली कडी होगा ।

पिंदोम के गुरिल्ला-पवत के ऊपर
 उदास चाद तेलीस पडा है
 रक्त की निगघ वूद की तरह
 स्मृतियों की वाली रोशनी बिरेरता
 यही मेरे दादा का फामी लगी थी
 और पिता को एक पाररूम ने चूमा था
 और यही कभी मेरी लाश पर
 तानाशाहो के अट्टहास सुनाई देंगे ।

लेकिन हम सत्र का खून
 आजादी की याद मे उदलता जा रहा है
 और दामत्व बोध मे भुके हुए सिर
 गव मे उठने लगे ह ।

भविष्य एक ऐसा खिलाडी है
 जो अमरता के अवरोधित-रास्ते पर
 लम्बी दौड लगाता हुआ चला आ रहा है ।

मैं उसके स्वागत के लिए
 आगे बढ़ गया हूँ
 एक चोमिल घडी की तरह
 दिल को हाथो मे लिए ।

बीस साल की खामोशी के बाद
बीस साल की बरसात के बाद
पिंदोस का गुरिल्ला पहाड़
अब भी कायम है—
घाम से ढके यूनान के भवित-वक्ष की तरह

एक और ग्रीस

आममान में लटकने है सगममर के प्रभामउल
और सपने रास्ते

सरकते हुए गाँवों में खो जाने हैं ।
तदी-जडा पर जमी है कुहने की पपड़ियाँ

जिन पर बायबी स्मृतियाँ मेल रही हैं ।
पाटन कोजिन पर रहा है

अधनाग का समेटने की
अपनी तटीली भुजाया में ।

जमेरीया में निमिन पाठ यहाँ नहा बिताता ।

भूगभ मिनेषन आर मर गए
'ग्रीम परचमों में निमिन है ।'

मैदान पर खड़ा है अपनी तरद लपटा को
बदकिशों के जग है बाग़ूमा का बुगार

उपलित हुए तो कोलरी गाड़ियाँ
मोक्षी आममान का जाती है ।

उगाह के भाट भूत और गाह तो गए
'ग्रीम परचमों में निमिन है ।'

अर लपन पर गाह फिर तुषी है

सूनी गलियो में
 ममुन्दर की खारी हवा घूमती है ।
 इतिहास पढो की जसुरत नही
 सभी जानते ह कि
 गुरिल्ला पर्वतो को उडाने के लिए
 हेरी ट्रूमैन ने डेरो-वम गिराए
 और यह कह कर लौट गया
 'ग्रीस पत्थरो का बना है ।'

यहाँ बंदूकों के भारी दस्तों से
 कामगरो के सिर फोडे जाते है
 और नाजुक गले
 फंदो मे अन्डो की तरह टूट जाते हैं ।

लेकिन
 आ दुनिया के तानाशाहो !
 पिदोस पर सूरज फिर उगेगा
 शहीदो की वापिसी की तरह
 क्योंकि ग्रीस पत्थरो से निर्मित है ।

अशक्त जनपद

या

चतुर्भुज-वायु का आह्वान

पूज के माथियो,
और पश्चिम के सज्जनो !
आपकी इजाजत हो तो कुछ कहूँ
स्पष्ट भाषा में
एक सीधे साधे ग्रामीण की तरह
ताकि बात का महत्त्व हो, भाषा का नहीं ।

बहुत पहले
आधी रात के अन्धेरे में
एक अजनबी हाथ और चाकू ने
एक खौफनाक जुम किया था ।
तब हम पुल बनाने में व्यस्त थे
सपनों के समुन्दर पर
और हमारा 'कल'
उमंगों का झीडा-मथल बनने जा रहा था ।

आप सवने यह जुम होते हुए देखा

पूर्व के साधियों
और पश्चिम के सज्जनों !

आपकी शासकीय आँखों के सामने
लाश से अब भी खून बह रहा है
मासूम लोगो के दिलों से
जो समुन्दर के उजाड़ किनारे हैं ।
'यारोस' के पथरीले-द्वीप में
लोगों के सिर पत्थरों की तरह लुढ़क रहे हैं ।

लेकिन हमारी खोपड़ियों में
उधारे-दिमाग भरने की
हर कोशिश का जवाब
हम अपने खून से देंगे
और 'एथन' की गलियों में मुनाई देगा—
"फासिज्म मुर्दाबोद !"

कभी हम
हँसते हुए इन गलियों से गुजरते थे
महकती रात को
अपने बन्धों पर उठाएँ ।
समय की वज्र-पड़ी भूमि पर,
हमारा हर एक शब्द
वहार के बीज की तरह था ।
लेकिन आपने देखते-देखते
हमारे 'दिन' की ठागे कुचल दी गई हैं
टैको के नीचे
और हमारी औलाद का भविष्य

तोपा नी तालियो पर गठा है
भयभीत-गरिब नी तरा ।

आज मेरे देश में
रुशिया दीवारा से सटी गयी है,
और गँटीने तारा में फँती
उम्मीद फटफडा रही है
और राक्षसी दम तोड़ रही है
अंधेरे की दहलीज पर ।
हमारी आवाज नुगई जा चुकी है
ताकि राक्ष मुनाई न दे ।

"बोको, वामरेड बोसीगिन ।
पदों में निक्कल कर अब सामने आओ
आजादी के परिस्ती
जॉनसा, विल्मन "
यूनान अक्षयन जोर अपग हो चुका है
और एक प्रेत छाया की तरह भटक रहा है
दुनिया के शहरो में
बद दरवाजो पर दस्तकें देता हुआ ।

यूनान बढ रहा है
यूरोप की सडकों पर
हवा की रफतार में
नीले आसमान का झुंडा फहराता हुआ ।

मुझे चतुर्भुज-हवा का आह्वान करने दो
ताकि समय के यायालय में

जुर्म दज हो सके ।

अब 'पार्थेनोन'
अपने बूटे दांत किटकिटा रहा है
और इन्तजार में है
बादलों की बड़बड़ाहट
और वज्रपात-जन्य रोशनी की ।

यूनान के बदन में
दिल
एक टाइम-बम है
जो अब कभी भी फट सकता है,
पूर्व के साथियों
और पश्चिम के सज्जनों ।

रिचर्ड निक्सन के नाम एक खुला पत्र

श्रीमन् निक्सन ।

हमने सास रोक कर तुम्हारा पदाभिषेक होते देखा
और तुम्हारी 'शपथ' बहुमूल्य लगती थी
और उम्मीद थी कि अब शान्ति-पतावा
घोड़ा-हाँकने की छड़ी से बाध दोगे ।

लेकिन हमने देखा

किस तरह अबाध बम-वर्षा में
इंडोचाईना की नीवें हिल गई ।

वज्र के लेखे में पिंजरो की सस्या बढ गई
और कश्मिस्तान में जगह पाने के लिए
मुर्दों की भीड लग गई ।
नारकोटिक्स और वैतनिक-हत्यारों को
आजादी मिल गई ।

लोआन के पिस्तौल को
ठंडी नालियों के सुराखों से
हमें अपने टेलीवीज़नो पर
अमरीका का भयकर चेहरा दिखाई दिया ।

इस लम्बे अरसे में
 तुमने धरती को मून में सोच दिया,
 फोर्ड और शवलेंट कारें
 दुनिया की हर सड़क पर सवार ह ।

वियतनाम का ध्वस हमारे लिए
 भयंकर सपनों की सम्पदा बन गया ह
 राजनैतिक-हत्यारों के पदचिह्न
 हर घर के सामने अवित हैं ।

तुम स्वयं वियतनाम के कंधों पर सवार हो
 एक जघन्य वैतात्रिक की तरह—
 तुम्हारी 'बुलेट-प्रूफ' कारें इसकी गवाह हैं ।
 और तुम्हारे ये मुकाम कालीन
 गरीबों की चमड़ी से बनाए गए हैं
 जो उनके जीवित रहते उधेड़ी गई थी,
 श्रीमन् निक्मन !

जब भी हम तक कोई नई खबर पहुँचती है
 गल फामी की तरह
 हवा की नस तक जाती है,
 टेलीवीज़नो और अखबार के पृष्ठों से
 मानवीय सून टपकने लगता है ।

हम कैसे सो सकते हैं जबकि
 डगलस और लौरहड मार्क
 वम-वपकी की गूँज
 हमारी दीवारों में ममा चुबी है ।

तुम्हारे बमों और गिमाईला से
आदमी में हिम्मत नहीं रही कि
आकाश की तरफ भिग उठाए ।

अब तुम्हीं बताओ, श्रीमान् निक्सा ।
हम कैसे सो सकते हैं
जबकि दुनिया की जमीर छतरे में है
और इस अभिग्राप्त-नक्षत्र पर
हथियारे सरेआम घूमते हैं ।
इस युद्ध की बदबू इतनी तीखी है कि
कि तुम्हारा राष्ट्रीय ध्वज भी
उसे नहीं पोछ भयता ।

इस विश्वासघात के बाद
अब सर पटकने में कोई तुम नहीं ।
हम अब लड़ सकते हैं
सिर्फ हस्ताक्षरों से
ताकि वहाँ पर 'ट्राईगर' दबाती जगलिया
अचानक बेजान पड़ जाएँ ।

हम विक्षिप्तों की वह आसिरी पीढ़ी हैं
जिसे हिटलर ने पैदा किया था
हम उस पीढ़ी की वचो खुची सन्तान हैं
जिसे एक बार तुम्हारे 'विकास' की कौध ने
अघा कर दिया था ।
हिरोशिमा के शिखर पर
आग की लपटें घिरी देखकर तुम चीख उठे थे
"बो देखो सूरज ।"

हम उधड़ी हुई स्मृतियाँ ह
 लपटें-धुआती
 दहकती भटिठयो से,
 यही कारण है कि
 हम तुम्हें माफ नहीं कर सकते,
 श्रीमन् निक्सन । ।

मैं कवि नहीं हूँ
 बल्कि आँखों पर सवार
 वक्त की जमीर हूँ
 सुनसान राता मे से गुजरती हुई ।
 मैं दौड़ रहा हूँ
 माँ-घरती का कटा सिर अपनी छाती से दबाए
 तुम्हारे घूमो ने जिसे विद्रूप बना दिया है,
 वो निक्सन ।

मैं गुजरता हूँ खटखटाता हुआ
 हस्पतालों की सिडकियाँ,
 उन सजनों और नमों के वधो को भ्रमभोरते हुए
 जो अचानक बुत बन चुके हैं ।
 वियतनाम दम तोड़ रहा है ! हम मर रहे हैं !
 क्या अब भी कोई उम्मीद पाकी है ?
 घरती का पूर्वोत्तर-मंदिर ध्वंसित हो रहा है ?
 उठो !
 कुछ करो । ।

चौन मे सत्याग्रहिया की भीड़ लगी है
 और आधी मे उड़ रहे हैं

गति मन्दर !
निम्ना मन्दर !
मन्दर ! !

दो गुना भाग-भा । पत्त रक्षित,
तुम्हारे साथ पड़ो
रिक्त !

गमा उगी गुप्त माद ? ?
तुम्हारे तज्ज्वा । गंगा ररो के लिए
मे गद गी जीवित-जलो जा रहे हैं
धस्तो का हवा म नृत्ता हूँ ।
उम्मे साथ बड रहा है । त्रिप
जिसो गद उम्मे साथ गहो दे र
और उम्मे गर्मी गिर
दाम से भुवा जा रहा है ।
अव उगे तुम
वह दयालु बूढ़ा मन गमभो
जो तुम्हारे गति रक्षो से गत धान के लिए
नदियाँ और भरने डडा फिरेगा ।
उम्मे बूढ़ा शरीर
एक हड्डियों की ऋषी पर भुवा हुआ है
वह धीरे-धीरे तुम्हारी ओर बढ़ रहा है ।
वाशिंगटन को जाती सड़हें
भीड़ से अवरुद्ध हैं ।

रिचर्ड निक्सन !
तुम कहा हो, रिचर्ड ?
क्या तुम्हें लोगो का दम तोडना सुनाई नहीं देता ?

क्या उनही चीरों तुम तरफ नहीं पहुँचती ?
क्या तुम बहरे हाँ चुके हो ?

लगटे सैनिकों की वेंसाखिया
तुम्हारा दरवाजा खटखटा रही है
रिचर्ड निवमन !

उधर देमो
पेंटागन किस तरह फँलता जा रहा है
एक पवताकार पाँव की तरह
यहूदियों की चींटियाँ की तरह कुचलता हुआ
और जो इन खूनी बरसात में
तुम्हारे लिए साबुन और फटा यामे राखा है
'दाहायो' के कारखाना में बनी ।

क्या तुम अंधे हो चुके हो
रिचर्ड निवमन ?

क्या तुम्हें वो औरत दिखाई नहीं देती
काले पहरावों में जो 'व्हाइट-हाऊस' के सामने
फासियाँ खड़ी कर रही है ?

तुम अभी उसे नहीं जानते
रिचर्ड निवमन !

वह इतिहास की छाया है
जो फाँसी के पास खड़ी
तुम्हारा इन्तजार कर रही है ।

रिपोर्ताजि

रात का वासी शव
खून में लथपथ मेरी आँखों के सामने पड़ा है,
उसकी आँखों में ठंडी आग भरी है।

यह शव
गुब्बारे-सा फलता जा रहा है
जो किसी भी क्षण फूट सकता है
मेरी आँखों के पास
एक हथगोले की तरह।

मैं आसमान का रंग बदल देना चाहता हूँ।

सभा-भवन

काली ऐनक पहन वह आदमी
तेजी से चलता हुआ
सभा भवन में दाखिल हुआ ।

प्रधान मंत्री,
मन्त्री,
संसद-सदस्य और अवरक्षक,
सभी में खामोशी छा गई
और सभी न भाग कर
काली ऐनक पहने उस आदमी का ,
स्वागत किया ।
मंच पर से
वह उनकी ओर देख कर मुस्कराया ।

उसके बाद उसने अपना काला कोट उतारा
और उसे फेंका वर
कमरे में इस तरह फका
कि सभी कोट के नीचे दब गए ।
कुछ क्षणों की उस खामोशी में लगा
जैसे किसी को अचानक चोच अघोरे में
गाठ बुतर रही हो ।

उमके बाद उसने अपना कोट समेट लिया
—जैसे वह उसका पख हो—
और उसने देखा कि कुछ ही क्षणों में
सभी गजे हो चुके थे ।

काली ऐनक पहने आदमी
फिर मुस्कराया ।
इसके बाद उसने अपनी छड़ी से
सब के सिरो में
—एक के बाद एक—
छेद कर दिए ।
हर एक छेद से
एक काली चिड़िया निकल कर उड़ने लगी
जो उस काली ऐनक पहने आदमी जैसी ही
दिखाई देती थी ।

—फल
एक नया दिन उदित होगा
हमारे देश के राजनैतिक क्षितिज पर ।

इसके बाद उसने सभी से विदा ली
और देखते ही देखते
अचानक छत में एक दरार पड़ गई
जिसमें से वे चिड़ियाँ उड़ कर
शहर की चारों दिशाओं में फल गईं ।
और काली ऐनक पहने वह आदमी

जिस दरवाजे से भाया या
उसी में से मुस्कराता हुआ
शायद हो गया ।

मुन्शेन

लेट कर जब मैं विजली बुझा चुका
—शहर के इस सस्ते होटल में—
तो अचानक फग कांपने लगा
और घूंटों की आवाज
मेरे विन्तर की तरफ बढ़ने लगी ।

मैं बत्ती जला कर फिर उठ बैठा
लेकिन पदचाप पाम आती गई ।
जाहिर था कि कोई
नीचे की मञ्जिल पर टहल रहा था ।
मैं नीचे उतरा तो देखा
वहाँ चित्र लटक रहे थे
हिटलर के अफसरो के
बरामदे की दीवारों पर ।

मैं फिर से ऊपर चला आया
और सोने की कोशिश करने लगा ।
लेकिन अंधेरे में
वही पदचाप फिर सुनाई देने लगी
भीड़ की भीड़ जसे ऊपर चढ़ती आ रही हो

मेरे कमरे की तरफ ।

उठ कर भाग निवलने की इच्छा के वायजूद

मैं तिप्पिय पड़ा रहा ।

तब अचानक मेरा पलंग फर्श से उठा

और एक हल्की चिता की तरह

खिड़की से बाहर बह गया ।

सोचा

कि अब फर्श पर जा गिरेगा

लेकिन ऐसा न हुआ

दरअसल मेरी खिड़की

एक रास्ता भर थी

जो दाबाऊ के चूल्हे धो जाता था ।

इसके बाद मेरी धाँत खुल गई ।

मेरी चर्ची

पसीना बन कर बह रही थी ।

गर्मों का मारा

मैं स्नानागार की ओर भागा

लेकिन साबुन देखते ही

मैं सहसा चौक पड़ा ।

वह किसी आदमी की

बटी हुई जिह्वा थी ।

लेकिन मैं हिचू नही समझना था

और उस साबुन के सामने

राम के मारे

मैं घबराती में गड़ गया ।

कलकत्ता

मुझे नहीं मालूम
अगर आपने कभी छुआ है
हाथों का कोढ़
और उन लोगों से मिले हो
जिनकी आँखों में
अधे-धुआँ का गहराव है
और जिनके घाव
फूलों पर जमी काई की याद दिलाती है ।

मुझे नहीं मालूम अगर तुमने कभी
कलकत्ते को रंगते सुना है
स्वयं अपने अन्दर ।

हडिड्या
जो प्रश्नवाचक-चिह्नो में ढल चुकी है
और मरणासन्न फेफड़ों की हवा में
सास लेती है
विद्रोही पीढियाँ ।

तुम कभी दुर्घटना-ग्रस्त नहीं हुए

लेकिन तुम्हारे दिल में जैसे
किसी ने वास्तु भर दिया हो
और विम्बापित-सपने सितारों की मीनार पर
तुम्हें फाँसी चढ़ाने की कोशिश में हैं।

जाने के बाद देता रहा हूँ
रुख निस्ताप है
और कलवत्ता रेंवा है
चीरकार की तरह
यथाय के गले में।

रोशनी के पीछे

आसमान पर जो बादल तैर रहा है
सिर्फ पनीला घुआ नहीं
बन्धिए एक पछो है
जिसकी प्यास का आकार
उसने अपने शरीर-सा है
जब भी हमने चाहा
उमका काँच तड़क कर ढेर हो जाना है
सड़क पर गिछी
हमारी छायाओं पर।

शब्दों पर
जब खामोशी की पपड़ी जमने लगती है
तो उस पर उग आते हैं
भयग्रस्त चीखों के बँकटस ।
स्मृति कदराओं के द्वार
अवरुद्ध पड़े रहते हैं
कुहरे की सावले तोड़ कर
वहाँ कोई नहीं जा सकता
अथ की तलाश में ।

समय का भारी पहिया
जब मुदिरल मे घूमता है
निस्पृहता की आरोपित-प्रक्रिया मे
मुझे समुन्दर भूल जाता है
मुझमे हवा अलग हो जाती है
और हम बुबड़े होकर
अपने दिलो पर भुक जाते हैं
समय की पदचाप सुनने के लिए।

स्वत्त्व

जमीन की शकल मेरे दिल जैसी है
मैं उन सब का सजातीय हूँ
जिनकी घरोहर यह मिट्टी है।

तुम्हारे विजयोल्लास की प्रतिध्वनिया
मेरे कण-पटो पर अकित हैं।

‘ग्रेनेड’ की शकल मेरे दिल जैसी है
जिसे मैं अपने हाथों में धामे हूँ
और इसे फेंकने की ताक में हूँ
वहा

जहाँ पर
लौह-शृङ्खलाओं के साँप लोटते हैं।

जल

जल हम बहा बर ले जाता है
मितारो के बीहड़ जंगलो से ।

ये हवा की टहनियाँ हैं
जिन्होंने
पातियों को चादई कर दिया
और पेड़ों को रसाक्त ।

ये हवा है
जिसकी खामोश लहरें
तोड़ जाती हैं
विगत-मृतियों के सूये चेहरे को
समय की
मूँडेर पर से ।

आकृति

मैं अधिकार की जड़ों से उगा हूँ
और काली टहनियाँ में बदल गया हूँ ।

मैं रात की आकृति हूँ
लेकिन मुझमें भरे हुए हैं
रोशनी के बुदबुदे ।

अपने गगनव्यापी रास्तों पर
लोगों को धराशायी होते देख कर
मुझे हँसी आती है ।

मैं आपकी आँखों के सामने से
बिना दिखाई दिए गुजर जाता हूँ ।

मैं आपकी जिजीविषा से परिचित हूँ
और मेरे कान
कानाफूसियों का घौसला बन चुके हैं ।
आपकी अपारदर्शी नज़र
मेरी ऊँचाई नहीं माप सकती ।
मैं आलोकित आँख हूँ

और रान का चेहरा हूँ
आपली गोद पर भुना हुआ ।

बाधियो और नूफानो को फाँदता हुआ
मैं दौड़ता चला जा रहा हूँ
और मेरी मजिल
एक कूँ है ।

जीवन-वृत्त

मैं एक पर्वत-पिंड हूँ
घुएँ की तरह फला हुआ,
और आग उगलता हूँ ।

मैं नहीं जानता
मेरी कौन-सी लपटें
वायु-पाश बनती हैं ।

और मेरे समानान्तर
सूरज उदित होता है
मुट्ठी की तरह तना हुआ
घरती के चेहरे पर ।

हवा

प्रत्यचा की तरह रुंपती है
पके फलों से फिसलती है ।

सोए हुए नगर को
सितारों पर गिठा आती है ।
नारा, पास्टरो और लाल फूलों का क्षोर
बाढ में बह जाता है ।

और समय आने पर
हवा ही के कारण
आदमी का गला घुट जाता है ।

आकाश

अगर आकाश
फिसलने का एक बड़ा मैदान भर होता
नीड़ा-प्रिय फरिश्तो के लिए
और

अगर आकाश हमें स्वीकार कर लेता
तो हम उसकी वायावी-मूर्ति को
—जो ठण्डे पत्थरो से गढ़ी गई है—
कब के तोड़ चुके होते ।

तुम्हें क्या गव होगा
हमारे सैटेलाइट्स किानी ही बार
तुम्हारे इस आकाश पर
बिलियर्ड खेल चुके हैं ।

हम बली होते रहे
एक काटो का ताज-भर जीतने के लिए,
हमने नगे अम्त्रो का जालिमन किया
अपने खून में
सपनों के मुरझाए फूल सींचने के लिए ।

अब

हजार माला इतजार के बाद भी
अगर तुम नहीं आओगे
तो यह धाँस फूलों का गुलदस्ता
हम अपने चारिसों को दे चुके होंगे ।

अगर आकाश

समुन्दर की तरह द्रवित होता
तो अमरत्य की राच-भूति
बच की टूट चुकी होती
और हम अपने फट झड़े में
लिपटे रह जाते ।

नाम-तुषार

अपने नीलाम घेरा से निकल कर
चाँद पहुँचता है
उदास पेड़ों के मड़प पर ।

इसमें
उन आतनायी आँखों की याद आती है
जिनसे आग टपकती है
वैसमझ घास पर ।

बीज

मैं जेल की पैदाइश हूँ
जिसकी दीवारे इस दुनिया में बँटी हुई है
और खिड़कियाँ अन्धी हैं ।

मैं सिर्फ
सपनों की ठंडी रोशनी से वाकिफ हूँ
और मूरज का अ-दाजा लगाता हूँ
दीवारों की घनी छायाओं से ।

अब मैं स्वयं में बन्द हूँ
एक हथ गोले की तरह
और इस फौलादी घेरे में
कभी भी फट सकता हूँ ।

शब्द-सकेत

१ पिंदोस १९४१-४५ के दौरान—जबकि द्वितीय विश्वयुद्ध की आधी अपनी घरावांछा पर थी—घीम में 'श्रान्ति' लाने की काशिश की गई थी जो कि असफल रह्यो। तनगुर्गिला युद्ध का 'केन्द्र' यही पिंदोस पर्यंत था। सभवत इम नाम का सवध एक प्राचीन ग्रीस-कवि 'पिंदारोस' से हो।

२ पारोस ग्रीस का एक वु प्रसिद्ध द्वीप। राजनसिन कदियो का कारागार। साइपेरिया' और 'राला पानी' का मस्वरण।

३ पार्येनोन एथन के 'एनापॉलिस' में यना एक प्रागैतिहासिक मन्दिर।

४ दाहायो मुशेन व पाम एक जमन गांव। हिटलर के तिनो में यहा पर यहूदियो के भातो से फामी की रश्मियाँ और उनकी धर्मी से नहान का सावुन बनाए की काशिश की गई थी।

